जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

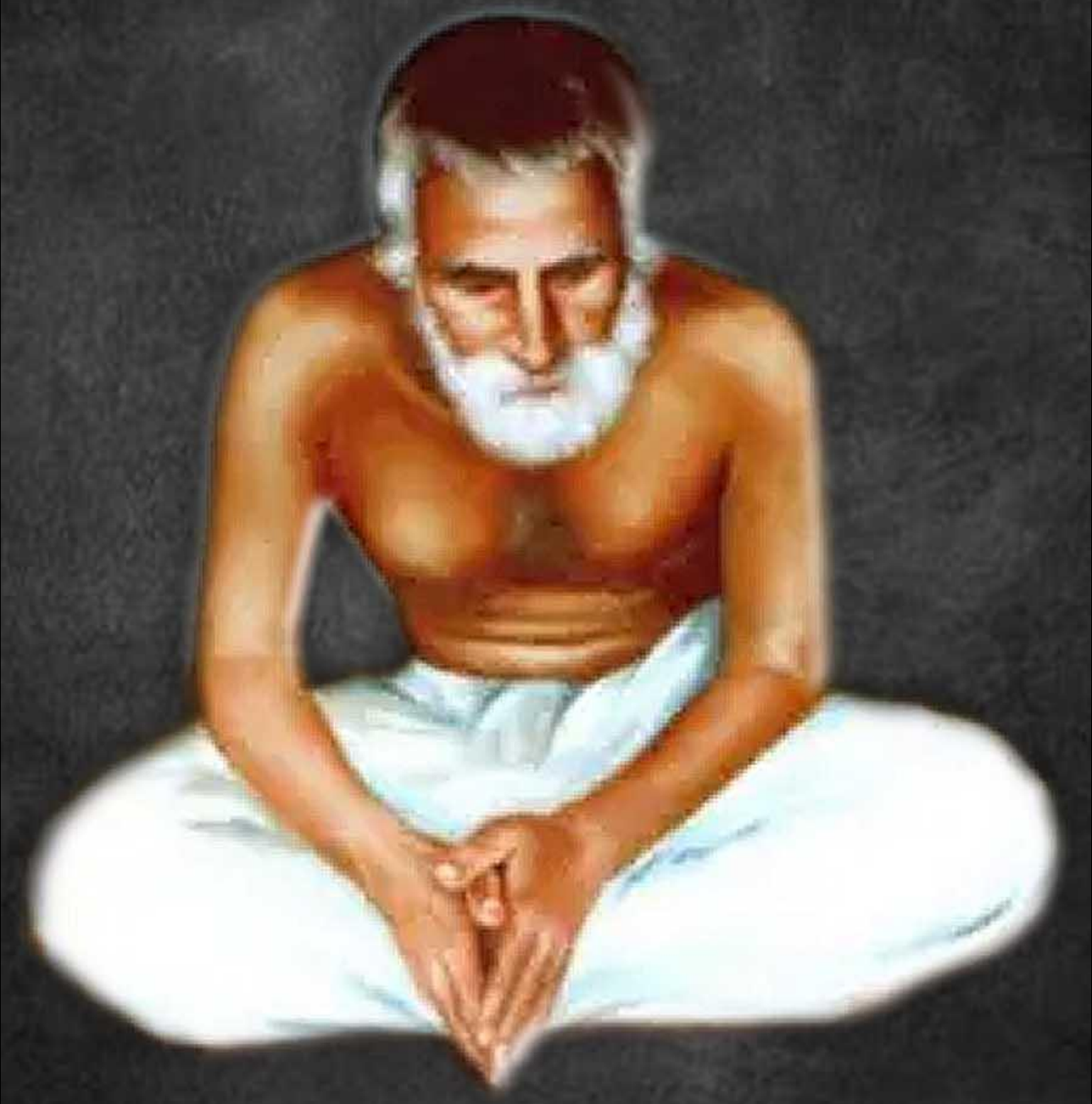

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

अन्याभिलाष

श्रीलगुरुदेव

श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने एक बार रथ यात्रा के एक दिन पहले सभी लोगों को बुलाकर पूछा— 'कल आप लोगों में से कौन-कौन कहाँ-कहाँ रथ यात्रा दर्शन करने जाएँगे?' पोड़ा-मा-तला में एक बहुत बड़ी रथ यात्रा और मेला होता है, पूर्वस्थली पर जमींदार बाबू के घर पर भी एक रथ यात्रा होती है।

वहाँ यदि जाएँगे तब वहाँ रसगुल्ले और दही चिड़वा मिल सकता है।' इस प्रकार पाँच - सात स्थानों के रथ यात्रा के समाचार बाबाजी महाराज ने सभी को बता दिए। इन सभी लोगों ने सोचा कि बाबाजी महाराज उन्हें रथ यात्रा के मेले में योगदान करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। श्रील बाबाजी महाराज के पास प्रतिदिन ही श्रीचैतन्य - भागवत, श्रीचैतन्य चरितामृत, श्रीमद् भागवत आदि का पाठ होता था, वहाँ उपस्थित अलग - अलग लोग ग्रन्थ पढ़ते और श्रील बाबाजी महाराज सिद्धान्त बोलते थे। श्रील बाबाजी महाराज प्रह्लाद चरित्र ही बार बार

सुनने की इच्छा करते और कहते कि महाप्रभु जी पुनः पुनः प्रह्लाद - चरित्र श्रवण की लीला प्रकाश करते थे। और कभी श्रील नरोत्तम दास ठाकुर रचित "प्रार्थना" एवं “प्रेम भक्ति - चन्द्रिका का पाठ सुनने और उसके सिद्धान्त की व्याख्या करते। पढ़ने वाले केवल ग्रन्थ पाठ करते जाते, बाबाजी महाराज ही वास्तव में वक्ता थे । उक्त रथ यात्रा के दिन सभी लोग रथ का मेला देखने में व्यस्त थे इसलिए पाठकों के अभाव के कारण पाठ बन्द रहा। उस दिन बाबाजी महाराज अपने छप्पर के दरवाजे को खोलकर मन्द मन्द मुस्कराते हुए बाहर आकर बैठ गये

और कहने लगे, — "आज जान आई है, सब गये हुए हैं, जो हरिनाम के प्रति अपराधी हैं, वे साधु-संग में हरिकथा - श्रवण - कीर्तन को छोड़कर रथ यात्रा देखने के छल से लड़की और महिलाओं को, लोगों की भीड़ को, भोगों की चीज़ों को देखने जाते हैं। लोग वैष्णव- संग करने का ढोंग करने आते हैं, लेकिन आनुगत्य नहीं रहने के कारण अन्याभिलाषाओं के प्रवाह में बह जाते हैं। " श्रील बाबाजी महाराज स्वयं ही खूब उच्च: स्वर से कीर्तन करने लगे। लोग रथ यात्रा देखकर क्रमश: बाबाजी महाराज के पास आने लगे, बाबाजी महाराज खूब

गंभीर होकर बैठे थे, किसी के साथ भी कोई बातचीत नहीं की।

श्रीलगुरुदेव